कही-सुनी .....डॉ. कैलाश नारद

मेलाराम ने खोजा मोगली

सर्दी की उस शाम मेलाराम के जानवर जंगल से जब वापस आए, तो पता चला, उनमें एक भेड़ और तीन बकरियाँ कम थीं। मेलाराम मरका पठार के जंगल में दोपहर तक अपने पशुओं को चराता रहा था। शाम होने से पहले ही वह घर लौट आया था। उसे वैध जी से अपने बीमार पिता की दवा लेनी थी। उसे मालूम था कि उसके न रहने पर भी, उसके पालतू जानवर घर वापस आ जाएँगे।

मेलाराम को चिन्ता हुई। उसने अपने खोए हुए जानवरों को खूब ढूँढा, लेकिन वे कहीं न मिले। इससे पहले बनवारी, मलथू और श्यामलाल भी अपने जानवर खो चुके थे। पास के रीठी, हर्रई, परतापुर और कुंडम जैसे गाँवों से भी कई पशु गायब हो गए थे। तय था, कोई चालाक चोर जानवरों की चोरी कर रहा था। लेकिन काफी कोशिशों के बाद भी गाँववाले इसका सुराग नहीं लगा पाए थे।

सन् 1834 के दिन थे। देश में अँग्रेज़ों का राज था। मेलाराम की उम्र सोलह साल की थी। एक दिन वह पास की पुलिस चौकी में दूसरे गाँववालों के साथ पहुँचा। दरोगा का नाम अब्दुल रहमान था। वह एक नरम दिल इन्सान था। उसने मेलाराम की शिकायत सुनी और बोला, "तुम सब घर जाओ। पुलिस ज़रूर उस चोर को पकड़ लेगी।"

दरोगा को इससे पहले भी कई और गाँवों से पशुओं के लापता होने की खबरें मिली थीं। उनके हाकिम निक्सन भी इस बाबत जानते थे। उन्हें बतलाया गया था कि पिछले तीन महीनों में करीब तीस जानवर सिवनी ज़िले के उन गाँवों से लापता हो चुके हैं जहाँ मेलाराम का भी ईसापुर नाम का गाँव था। निक्सन ने सिपाहियों की गश्त बढ़ा दी थी, लेकिन जानवर थे कि धड़ल्ले से गायब हो रहे थे।

दिसम्बर के दिन थे। सर्दी खूब थी। उस शाम बारिश का सिलसिला जो शुरू हुआ तो आधी रात के बाद ही खत्म हो पाया। मेलाराम सो रहा था। तभी कुछ आहट पाकर उसकी नींद टूटी। आवाज़ उसके घर के पिछवाड़े से आई थी। वहाँ उसके ढोर बैठे थे। उसे लगा, ज़रूर कोई चोर है। मेलाराम ज़ोर से चिल्लाया, "कौन है?" वह लाठी लेकर बाड़े की तरफ भागा। उसने देखा, वहाँ उसकी एक बकरी गिरी पड़ी थी। उसकी पीठ से खून बह रहा था।

मेलाराम ने यह भी देखा कि बाड़े का दरवाज़ा टूटा हुआ है। दरवाज़ा बाँस और लकड़ी का बना हुआ था। उसकी बल्लियाँ और पटिए ज़मीन पर बिखरे हुए थे। शोर सुनकर दूसरे लोग भी जाग गए। वे लाठियाँ और मशालें ले मेलाराम के घर आ गए। गाँव में डेरा डाले कुछ सिपाही भी उस भीड़ में थे। पुलिस वालों ने देखा कि बारिश से गीली हुई ज़मीन पर किसी के कदमों के निशान थे। निशान बड़े अजीब से थे। मिट्टी पर किसी आदमी के पैरों की छाप तो थी ही, साथ ही उनके पीछे हथेलियों की भी छाप थी। लगता था जानवरों की तरह पीठ उठाकर कोई ऐसा जन्तु मेलाराम के घर से भागा है जो है तो जानवर, मगर जिसके हाथ और पैर किसी आदमी की तरह हैं। ये निशान थोड़ी दूर जाकर मिट गए थे, क्योंकि बरसात के कारण जहाँ-तहाँ पानी भर गया था।

मेजर निक्सन को भी खबर लगी। वे ईसापुर आ गए। उन्होंने उस जन्तु को खोजना शुरू कर दिया। उनके साथ गाँववाले भी थे। गाँव के बाहर एङ्ग टूटा हुआ मन्दिर था। वहाँ चौबीसों घण्टे सन्नाटा रहता था। उसके आसपास खूब घना जंगल था। दिन के वक्त भी वहाँ से निकलने में डर लगता था।

"हमें बड़ी सावधानी बरतनी है," मेजर निक्सन बोले, "हो सकता है, चोरों की तादाद ज़्यादा हो। उनके पास हथियार भी हो सकते हैं।"

मेलाराम का कुत्ता भी उसके साथ था। उसने ज़ोर-ज़ोर से भौंकना शुरू कर दिया। देखादेखी पुलिस के कुत्ते भी भौंकने लगे। वे एकाएक मन्दिर के दरवाज़े पर पहुँच गए। दरवाज़ा टूटा हुआ था। भीतर कोई नहीं था। फिर भी लगा जैसे कुत्तों को किसी के होने की टोह मिल गई थी।

"आगे बढ़ो।" निक्सन साहब ने आदेश दिया।

मशालें लेकर सिपाही मन्दिर में घुस गए। मेलाराम और उसका कुत्ता उनके साथ थे। निक्सन साहब को मन्दिर के उत्तरी भाग में टूटी हुई सीढ़ियाँ दिखीं। लगता था नीचे कोई तहखाना था। सीढ़ियाँ उसी तहखाने में जाती थीं।

तभी, कोई गुर्राया। सिपाही सहम गए। लेकिन मेलाराम साहसी था।

"चल, शेरा," उसने अपने कुत्ते से कहा, "नीचे चलते हैं।"

तभी, कोई उसके कुत्ते पर झपटा।

निक्सन साहब और दूसरे गाँववालों ने देखा, कुत्ते पर झपटनेवाला प्राणी अजीब-से आकार का था। उसका शरीर तो आदमी का था, लेकिन हाव-भाव जानवर जैसे थे। तहखाने से बदबू आ रही थी।

जल्दी ही उस प्राणी को काबू में कर लिया गया। जिस तहखाने में वह रहता था वहाँ बहुत-सी हड्डियाँ पड़ी हुई थीं।

मेजर निक्सन को सारा मामला समझ में आ गया। उन्होंने कहा, "लगता है, बचपन में इसे किसी भेड़िए ने चुरा लिया था। उसकी संगत में रहकर यह खुद भेड़िया बन गया है और भेड़ियों की तरह शिकार करने लगा है।"

"तो यही है हमारे जानवरों का चोर!" गाँववाले बोले।

"हाँ।" निक्सन साहब ने जवाब दिया, "आज के बाद किसी पशु की चोरी नहीं होगी।" फिर उन्होंने मेलाराम की पीठ थपथपाई। बोले, "इस लड़के की हिम्मत के कारण इस नर भेड़िए का पता चला।"

विलियम स्लीमैन का नाम ठगों का दमन करने के कारण पूरी दुनिया में मशहूर है। वे उन दिनों जबलपुर में प्रशासक थे। उस नर भेड़िए को उनके पास लाया गया। स्लीमैन ने अपनी पुस्तक *द रैम्बल्स एंड रिकलैक्शन्स ऑफ एन इंडियन ऑफिशियल* में यह पूरा किस्सा लिखा है। गाँववालों ने उस नर-भेड़िए का नाम "बाल भगवान" रखा। प्रसिद्ध साहित्यकार रुड्यॉर्ड किपलिंग जब भारत आए, तो उन्होंने विलियम स्लीमैन की यह पुस्तक पढ़ी। उन दिनों वे अपनी प्रसिद्ध किताब *द जंगल बुक* लिख रहे थे। "बाल भगवान" की याद उन्हें थी। उसी को उन्होंने *द जंगल बुक* में मोगली नाम दिया।

द जंगल बुक के मोगली पर अब तक करीबन पच्चीस फिल्में बन चुकी हैं। मध्यप्रदेश सरकार ने सिवनी ज़िले में बच्चों का एक पॉर्क बनवाया है। इसे "मोगली पार्क" नाम दिया है।

चित्रः अतनु राय